SWAR SINDHU: NATIONAL PEER-REVIEWED/REFEREED JOURNAL OF MUSIC
A UGC CARE LISTED JOURNAL
ISSN 2320-7175 (O) | VOLUME 12, ISSUE 03, DECEMBER, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org

भक्त सूरदास के काव्य में राग-रागिनियों का विश्लेषण: भक्ति का संगीतात्मक स्वरूप

AMANNEET KAUR ARORA

Research Scholar, Central University of Punjab, Bathinda

सार

भक्त सूरदास, एक महान भक्ति कवि और संत, ने अपने काव्य में श्री कृष्ण के प्रति अपनी गहरी भक्ति को राग-रागिनियों के माध्यम से व्यक्त किया है। उनकी रचनाएँ न केवल भक्ति का भाव व्यक्त करती हैं, बल्कि सांगीतिक गहराईयों से भी परिपूर्ण हैं। भक्त सूरदास का काव्य रागों के चयन और उनके संगीतात्मक स्वरूप में भक्ति की प्रौड़ता को उजागर करता है। भक्त सूरदास की रचनाओं में सांगीतिक दृष्टिकोण एक महत्वपूर्ण विषय है| आपने भक्ति-भाव को व्यक्त करने के लिए न केवल संगीत का उपयोग किया बल्कि आपकी कविताओं में राग-द्वैष के पारंपरिक विवादों को समाधान के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिससे भक्ति और संगीत का मधुर मिलन अनुभव होता है। आप ने विभिन्न राग-रागिनियों का प्रयोग कर भक्ति-भाव को गेय रूप में प्रस्तुत किया। अतः आप की रचनाओं (पदों और दोहों) में रागात्मक धुनें भावनाओं का अद्वितीय अनुभव प्रदान करती हैं। संगीत को धार्मिक भावनाओं के व्यक्त करने का माध्यम बनाकर, भक्त सूरदास ने अपने अनुयायियों, अन्य साधकों एवं पाठकों को एक राह दिखाई है। इस प्रकार, उनकी रचनाओं में सांगीतिक दृष्टिकोण भक्ति और संगीत के इस अद्वितीय संयोग को उजागर करता है, जो उनके समय और सोच के आधार पर महत्वपूर्ण है।

विशेष शब्द: *भक्त सूरदास, काव्य, संगीत, राग-रागिनियाँ, भक्ति, वैष्णव संप्रदाय*

भूमिका

भारतीय संगीत शास्त्र पर वैष्णव सम्प्रदाय का विशिष्ट प्रभाव रहा है। वैष्णव मन्दिरों में भगवान के सम्मुख लीला गान आठों प्रहर एवं सभी ऋतुओं के समयानुकूल गाए जाते हैं| यह लीलागान की परिपाटी दीर्घकाल से चली आ रही है| इस परिपाटी का संगीत जगत में विशेष योगदान देखने को मिलता है। आज के प्रचलित ध्रुपदों, धमारों, होरियों, तथा ख्यालों के पदों के सूक्ष्म एवं अभ्यासपूर्ण निरीक्षण से यह कथन भलीभाँति परिपुष्ट हो जाता है कि इन पदों में भक्त सूरदास, भक्त कुम्भनदास, भक्त लक्ष्मनदास, भक्त परमानन्द दास आदि भक्त कवियों के मधुरतम ललित भावों से भरे गीतों का कितना विपुल स्थान रहा है। इस परंपरा में भक्त सूरदास को शिरोमणि कवि कहा गया है|

डॉ. मुकेश गर्ग लिखते हैं कि "गुणी तानसेन जी, जो भारत के महान गायनाचार्य थे, जिनके गान की ख्याति और तान की प्रसिद्धि आज भी सर्वमान्य है। उनके पदों से एवं नायक बैजू बावरा, जो भारत के उस समय के सर्वश्रेष्ठ संगीतधन थे, उनके और अन्य अनेक गुणीजनों के पदों से आज का संगीतविश्व में मुखरित है। तानसेन जी के महान् गुरु स्वामी हरिदास जी, जिनके गीतधन से आज का संगीत साम्राज्य समृद्ध है तथा जिस लोकोत्तर सम्पत्ति से संगीत सृष्टि आज भी गौरवान्वित है, ऐसे संगीत महर्षि भी संगीत जगत के लिए वैष्णव सम्प्रदाय की ही देन हैं।"[1]

इसी तथ्य को सत्यापित करते हुए महारानी शर्मा लिखते हैं कि "तानसेन के गुरु स्वामी हरिदास भी वृन्धावन के क्रील्कुंजों के बीच केवल अपने आराध्य श्री बांके बिहारी के लिए ही गाते थे।"[2] भक्ति सम्प्रदाय के सभी भक्त कवि तो थे ही, साथ ही वे श्रेष्ठ गायक भी थे| यदि इन्हें 'गायक कवि' कहा जाए तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । भक्त सूरदास, तुलसीदास, कबीरदास, रविदास, मीराबाई, गुरु नानक देव जी, नरसी मेहता, दयाराम, तुकाराम तथा त्यागराज आदि सभी महान भक्त थे, श्रेष्ठ कवि थे और परम गायक थे। इन गायक कवियों का संगीत की दृष्टि से उल्लेखनीय योगदान है।

1 गर्ग (डॉ.) मुकेश, सम्पादकीय, सूरसागर के पदों का संगीतक विश्लेषण, पृ-i, हिंदी

2 शर्मा, महारानी, संगीत क्षेत्र में भक्ति काल के कवियों का योगदान, पुस्तक-साहित्य और संगीत, सम्पादक: डॉ. मुकेश गर्ग, वाणी प्रकाशन, पृ-317, हिंदी

भक्त सूरदास का जीवन और काव्य

भक्त सूरदास का जीवन और उनका काव्य दोनों ही कृष्ण भक्ति से गहराई से जुड़े हैं। उनका जन्म 1478 में मध्यप्रदेश के सकटपुर नामक गाँव में हुआ था। कहा जाता है कि उन्होंने अपनी दृष्टिहीनता के कारण भक्ति को अपने जीवन का आधार बनाया। उनका काव्य मुख्यतः श्री कृष्ण की लीलाओं, प्रेम और भक्ति पर केंद्रित है। भक्त सूरदास ने "सूरसागर", "सूरकृष्ण काव्य" और अन्य रचनाएँ की हैं, जो कृष्ण भक्ति को समर्पित हैं।

भक्त सूरदास के काव्य में भावनाओं का एक अनूठा संयोजन है, जो उन्हें अन्य कवियों से प्रथक बनाता है। उनकी रचनाएँ एक ओर जहाँ भक्ति का संदेश देती हैं, वहीं दूसरी ओर संगीत के माध्यम से भावनाओं को व्यक्त करती हैं। भक्त सूरदास हिन्दी साहित्य के ऐसे सूर्य हैं जिन्होंने अपने अमर साहित्य के माध्यम से कृष्ण भक्ति की अजस्र एवं अनंत धारा को जनमानस में प्रवाहित किया। लौकिक तृष्णाओं से दूर रहकर स्वान्तः सुखाय ही भक्त सूरदास ने अधिक लिखा है। भक्त सूरदास ने अपने काव्य में मानव-हृदय के सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावों का जो मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है, व्यंग्य, श्रृंगार एवं वात्सल्य के साथ करुण, मर्मस्पर्शी, हृदयग्राही विरह-वेदना की जो मार्मिक अभिव्यंजना की है, वो विलक्षण है| उनकी साहित्यिक रचनाओं में सुललित पदों के निर्माण में विभिन्न रंगों का यथावत उल्लेख, विविध उपमा एवं संकेत की उपयुक्तता, स्वभाविकता और राग-रागिनियों में पद रचना करते हुए छन्दों के अत्यंत-सौन्दर्यात्मक प्रयोग को देखकर बडे-बड़े आचार्य और संगीतज्ञ उनकी प्रशंसा कर उठते हैं। उनके प्रत्येक पद में प्रत्येक छन्द की यति-गति का सम्बन्ध प्राप्त लय विधान से होता है। अतः यह कहना गलत नहीं होगा कि भक्त सूरदास भक्त, गायक और कवि तीनों ही थे। छुटपन से ही मधुर-भाषी एवं सुरीले भक्त सूरदास ने आराध्यदेव को रिझाने, उनकी लीला और छवि का गान करने के लिए काव्य और संगीत का सुमेल किया|

डॉ. जतिंद्र सिंह खन्ना के अनुसार: "संगीत में चंचल वृत्तियों को केन्द्रीभूत करने, साध्य के साथ एकीकरण तथा आत्मा-परमात्मा का मिलन कराने, भक्ति में तन्मयता लाने और परम शांति को प्रदान करने की असीम शक्ति है।"[1] अतः संगीत प्रभु उपासना एवं प्राप्ति का एक सरल राह है|

मनुष्य जीवन में संगीत का महत्वपूर्ण स्थान है। स्वभाव से ही मानव का आकर्षण गीतों की ओर होता है। संसार की सभी भाषाओं में गीति परम्परा प्राचीन काल से चलती आ रही है। गीति में भावों का सहज एवं प्रवाहमान स्वरूप उपस्थित होता है। सफल गीतिकाव्य के दृष्टिकोण से देखा जाए तो निम्नलिखित चार तत्त्व परमावश्यक हैं -

(1) आत्मप्रकाशन

(2) भावों की गहनता

(3) संक्षिप्ति

(4) संगीतात्मकता

संगीत से सबंधित गीति काव्य जयदेव से विद्यापति, विद्यापति से कबीर तथा इसी क्रम में सूर (भक्त सूरदास जी) के काव्य में पहुंचा। सूर की रचनाओं में 'सूरसागर' उनका प्रतिनिधि ग्रन्थ है, इसमें भक्ति, वात्सल्य और श्रृंगार की त्रिवेणी स्वछन्द ढंग से कल्लोल कर रही है। भावों के अनुकूल राग-रागिनी तथा तालों का निर्देश है। भक्ति और श्रृंगार का समन्वय दृष्टिगोचर होता है और 'कोमलकांत' पदावली में पद-रचना है। महाकवि भक्त सूरदास के पदों में संगीत का शास्त्रीय पक्ष भरपूर मिलता है। महारानी शर्मा कहती हैं कि "भक्त सूरदास ने सम्राट अकबर को तो अपना एक भजन 'मन रे, कर माधों सौं प्रीत' सुनाकर ही अपने संगीत ज्ञान स्व चंकित कर दिया था।"[2] अतः भक्त सूरदास अपने साथ-साथ औरों को भी भक्तिरस में विलीन होने पर बाध्य कर दिया करते थे|

1 खन्ना, जतिन्द्र सिंह, मध्यकालीन धर्मों में शास्त्रीय संगीत का तुलनात्मक अध्ययन, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ़, पृ. 57, हिंदी

2 शर्मा, महारानी, संगीत क्षेत्र में भक्ति काल के कवियों का योगदान, पुस्तक-साहित्य और संगीत, सम्पादक: डॉ. मुकेश गर्ग, पृ-318, हिंदी

राग-रागिनियों का महत्व

भक्त सूरदास के काव्य में राग-रागिनियों का प्रयोग एक महत्वपूर्ण तत्व है। रागों की विभिन्नता और उनकी विशेषताएँ उनके गीतों को संगीतमय बनाती हैं। राग केवल संगीत का हिस्सा नहीं होते, बल्कि वे भावनाओं का एक साधन भी हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि भक्त सूरदास ने स्वतः ही रागों का चयन उनके भावार्थ को ध्यान में रखकर किया हो|

पंडित प्यारे लाल श्रीमाल सरस पंडित, कवि भक्त सूरदास के सन्दर्भ में लिखते हैं कि "गऊ घाट पर अनेक लोग भक्त सूरदास के पास संगीत की शिक्षा ग्रहण करने जाते थे। उनकी पद रचना एवं गान विधा से प्रभावित होकर ही महाप्रभु वल्लाभाचर्य जी ने उन्हें पुष्टिमार्ग में दीक्षित किया था वैसे तो अष्टछप के सभी भगत कवि होने के साथ साथ उच्च कोटि की संगीतज्ञ भी थे किन्तु भक्त सूरदास का स्थान उनमें सर्वोप्रिय था।" [1] संभवतः इसी कारण भक्त सूरदास को इस संप्रदाय में शिरोमणि कवि होने का सम्मान प्राप्त हुआ|

भक्त सूरदास ने अपने काव्य में 'राग बिलावल' का अधिक प्रयोग किया है, जिससे यह सिद्ध होता है कि राग-बिलावल भक्त सूरदास के पसंदीदा रागों में से एक था। इसके अतिरिक्त भक्त सूरदास ने अपनी काव्य रचनाओं में भारतीय शास्त्रीय संगीत के राग आसावरी, बिलावल, सारंग, कल्याण, केदारो, मल्हार, नट, सोरठ, भूपाली, बसंत, श्री के साथ-साथ 87 प्रकार की राग-रागिनियों का वर्णन किया है, इनमें सोरठ, सूहा, बिलावल, तोड़ी, नायकी, मल्हार, कामोद, बिलावल, रामकली, गौड़-सारंग, नट-नारायणी, गौड़-मल्हार, राझीमलार, राझी-रामगिरी, अल्हैया-बिलावल, श्रीमलार का नवीन राग-रागिनियों के रूप में प्रयोग किया है।[2]

सूर-सारंग, पटमंजरी और सूरदासी-मल्हार रागों का आविष्कारक भक्त सूरदास को ही माना गया है। कवि भक्त सूरदास द्वारा श्याम श्यामा की रासलीला पर अनेक पद राग रागिनियों में निबद्ध हैं जैसे

"ललिता ललित बजाये रिझावत, मधुर बीन कर लीन्हें,
नाम प्रभात राग पंचम, मालकौंस रसभीनें
सुर हिंडोल, मेघ मालव, पुनिए सारंग सुर नर जाना।"[3]

सूर के पदों के शीर्षक में राग का नाम मिलता है। काव्य को सःरस बनाने के लिए उन्होंने बिलावल, सारंग, धनाश्री, मल्हार, गौरी, रामकली, केदार, बिहागड़ा, मारु, गूजरी और तोड़ी आदि रागों का प्रयोग किया है। उदाहरण स्वरूप भक्त सूरदास ने रागिनी भैरवी का उपयोग प्रेम और विरह की गहन भावनाओं को व्यक्त करने के लिए किया। इस राग में कष्ट के साथ-साथ समर्पण का अनुभव होता है, जो प्रेम की गहराईयों में विरह की तड़प को दर्शाता है। जब भक्त सूरदास कृष्ण के प्रेम में व्याकुल होते हैं, तब रागिनी भैरवी उनकी संवेदनाओं को संगीतमय रूप में व्यक्त करने में सहायकसिद्ध होता है।

मल्हार राग का विशेष उपयोग वर्षा की मधुरता और प्रेम के उल्लास को दर्शाने के लिए किया जाता है। इस राग की स्वर लहरियाँ वर्षा की बूंदों की तरह हैं, जो प्रेम में खुशी और उल्लास का अनुभव कराती हैं। भक्त सूरदास ने अपनी वाणी में राग-मल्हार पर आधारित पदों में वर्षा एवं गरजते-बादलों की उपमा देकर प्रभु-प्रेम को स्वयं पर बरसती वर्षा के रूप में माना है|[4] भक्त सूरदास ने राग-बागेश्री का उपयोग विरह की भावनाओं को व्यक्त करने के लिए किया। यह राग भी भैरवी की भांति प्रेम में विरह के कष्ट को उजागर करता है और श्रोताओं को उस दर्द में डूबने पर विवश करता है। भक्त सूरदास के काव्य में इस राग में निहित करुण रस ने प्रेम की पीड़ा को सुन्दरता से व्यक्त किया। इस प्रकार भक्त सूरदास के पदों में विभिन्न रागों का प्रयोग काव्य को सःरस बनाने के लिए किया गया है, जैसे बिलावल, सारंग, धनाश्री, मल्हार, गौरी, रामकली, केदारा, बिहागड़ा, मारु, गूजरी और तोड़ी, साथ ही कहरवा, दादरा, चौताल और रूपक ताल।

---

1 प्यारे लाल श्रीमाल सरस पंडित, भक्त सूरदास का संगीत पक्ष, साहित्य और संगीत, पुस्तक-साहित्य और संगीत, सम्पादक: डॉ. मुकेश गर्ग पृ-321, हिंदी

2 प्यारे लाल श्रीमाल सरस पंडित, भक्त सूरदास का संगीत पक्ष, पुस्तक-साहित्य और संगीत, संपादक: डॉ. मुकेश गर्ग, पृ-322, हिंदी

3 महारानी शर्मा, संगीत क्षेत्र में भक्ति काल के कवियों का योगदान, पुस्तक-साहित्य और संगीत सम्पादक डा. मुकेश गर्ग, पृ-318, हिंदी

4 https://youtu.be/8jpd3iMXY00?si=v6ngSoXn0eLI-M3K गायक द्वारा यह पद राग देस में गाया गया है|

भक्त सूरदास ने राग-रागिनियों के माध्यम से विभिन्न भावनाओं को व्यक्त किया। जिस प्रकार उपरोक्त उदाहरणों में दर्शाया गया है कि रागिनी भैरवी में प्रेम और विरह की भावना का संवहन है, जबकि राग-मल्हार में वर्षा और प्रेम का उल्लास। रागों की ये विशेषताएँ भक्त सूरदास के काव्य को जीवंत बनाती हैं और पाठकों को भावनात्मक स्तर पर जोड़ती हैं।

भक्त सूरदास के संगीत गुरु के बारे में कुछ स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलता लेकिन भक्त सूरदास की सांगीतिक विवेक से यह प्रतीत होता है किकवि सूरदास को संगीत की प्रेरणा कहीं से तो मिली होगी, कदापि वह स्वयं प्रभु से भी मिली हो सकती है। जिस प्रकार भक्त सूरदास के काव्य में संगीत से सम्बंधित अनेक सांगीतिक वाद्यों का उल्लेख मिलता है, यह स्पष्ट हो जाता है कि संगीत प्रेमी एवं संगीत प्रेरित थे। भक्त सूरदास रचित सूरसागर में मृदंग, बीन, सारंगी, मुरज, रबाब, रूंज, बांसूरी, झालरी, किनरी, सुरमंडल, जलतरंग, आवज, पखावज, सहना, कंसताल, तानतरंग, खंजरी, कठताल, पटह, ढोलक, मुरली, आनक, धिमधिम, शंख, निशान आदि वाद्यों का वर्णन मिलता है।[1] आप ने तिताला, चोताला, पटताल, जत ताल, एकताल और चम्पक आदि तालों का वर्णन किया है।

भक्त सूरदास काव्य और संगीत: अंतर सम्बन्ध

सूर के पद सभी दृष्टियों से सौन्दर्यात्मक और सफल प्रमाणित होते हैं। जैसे कि हम उपरोक्त अध्यायों में देख आए हैं कि आपकी रचनाएँ रागों के चयन, पद के विषय, प्रकृति और उसके रस के अनुकूल है। विद्वानों ने तो सूरसागर को रस का सागर कहा है| भक्त सूरदास की रचनाओं का मुख्य विषय तथा आलंबन श्री कृष्ण हैं, चूँकि भक्त सूरदास पुष्टिमार्ग के भक्त कवि थे इसलिए इनके गीतों में पुष्टिमार्ग की प्रेमलक्षण भक्ति की प्रधानता है। श्री कृष्ण की भक्ति और आराधना सूर अत्यन्त अनन्य भाव से करते हैं। जब वात्सल्य की बात आती है तो सूर ने श्री कृष्ण की बाल-सुलभ चेष्टाओं-रूठने, चलने, शैतानी करने, झूठी शिकायत करने आदि का सूक्ष्म तथा हृदयास्पर्शी चित्रांकन किया है। जब श्रृंगार की बात आती है तो सूर ने श्रृंगार के दोनों पक्षों का वर्णन किया है। यद्यपि संयोग की अपेक्षा वियोग में भक्त सूरदास का कौशल अधिक निखरा है किन्तु संयोग श्रृंगार के पदों में भी अत्यन्त सःरस एवं मार्मिक वर्णन मिलता है। गोपियों की आँखें कृष्ण-वियोग में निरन्तर इतनी बरसती हैं कि इनसे होड़ में घन भी हार जाते हैं -

"सखी, इन नैननि तैं घन हारे
बिन ही रितु बरसत निसि बासर, सदा मलिन दोऊ तारे।।
ऊरध स्वास समीर तेज अति, सुख अनेक द्रुम डारे।"[2]

भक्त सूरदास ने जनभाषा में भक्ति को भव्य रूप में चित्रित करते हुए श्रृंगार, वात्सल्य और माधुर्य की सार्वभौम सत्ता का उदात्त वर्णन किया है। ब्रजभाषा से भक्त सूरदास नहीं, भक्त सूरदास से ब्रजभाषा प्रसिद्ध हुयी जान पड़ती है।

ताल और लय भक्त सूरदास की भाषा के प्राण हैं। लय उनकी काव्य भाषा को स्वाभाविक रूप से संगीतात्मकता प्रदान करती है और भावों के साथ अपनी इस किंचित् संगीतमयता के कारण माधुर्य और सरसता तो भावों के साथ लाती ही है, साथ ही एक प्रवाह-शक्ति तथा लोच भी उत्पन्न करती है। भक्त सूरदास ने ब्रजभाषा को अक्षय निधि प्रदान की, उससे भाषा में जो अद्भुत शक्ति और ध्वननशीलता प्राप्त हुई वह अद्वितीय है। डॉ. नगेन्द्र कहते हैं कि "ब्रजभाषा के अग्रदूत भक्त सूरदास ने इस भाषा को जो गौरव.गरिमा प्रदान की, उसके परिणाम स्वरूप ब्रजभाषा अपने युग में काव्य-भाषा के राजसिंहासन पर आसीन हो सकी। सूर की ब्रजभाषा में चित्रात्मकता, अलंकारिकता, भावात्मकता, सजीवता, प्रतीकात्मकता, बिंबात्मकता पूर्ण रूप से विद्यमान है। ब्रजभाषा को ग्रामीण जनपद से हटाकर उन्होंने नगर और ग्राम के संधिस्थल पर ला बिठाया था। भाषा में प्रवाह बनाए रखने के लिए लय और संगीत पर कवि का सतत ध्यान रहा है। राग-रागिनियों के स्वर-ताल में बंधी हुई शब्दावली जैसी सरस भाव-व्यंजना करती है वैसी सामान्य पदावली नहीं कर सकती। वर्ण-मैत्री और संगीतात्मकता सूर की ब्रजभाषा के अलंकरण हैं"।[3]

1 प्यारे लाल श्रीमाल सरस पंडित, भक्त सूरदास का संगीत पक्ष, पुस्तक-साहित्य और संगीत, संपादक: डॉ. मुकेश गर्ग, पृ-324, हिंदी
2 https://youtu.be/S_EP0Y-Z6v8?si=Jwx0dZh3eJNNQZcb
3 उद्धत, मनमोहन गौतम,सूर की काव्य कला, वाणी प्रकाशन, 1977, पृ-145, हिंदी

भक्त सूरदास ने भक्ति को रसमय और रागात्मक बनाने के लिए काव्य और संगीत का आश्रय लिया है, जिससे भक्ति नये क्षितिज को छूने लगी। काव्य और संगीत, दोनों ही गतिशील कलाएँ हैं और दोनों ही कर्णाेंद्रिय के माध्यम से आनन्दोद्रेक करती हैं। ध्वनि और लय का प्रयोग संगीत और काव्य में समान रूप से होता है। संगीत जिन भावनाओं की सूक्ष्म और निराकार अभिव्यक्ति करता है, उन्हीं का कविता साकार रूप प्रदान करती है। कविता जब तक गायी नहीं जाती, वह पूर्ण आनन्द नहीं दे पाती और संगीत जब तक गीतयुक्त नहीं होता, तब तक पूर्णरूपेण प्रभावशाली नहीं बनता। "संगीत सौन्दर्य तथा नाद सौन्दर्य की वृदि के लिए भक्त सूरदास के इस काव्यग्रन्थ में री, अरी, एरी, रे, जी, हौं, हो, ए आदि शब्दों का प्रयोग बहुलता से दिखाई पड़ता है। इन शब्दों के प्रयोग से भाषा में सुकुमारता आती है और मात्रायों की पूर्ति हो जाती है। लय-ताल सरलता से बँध जाते हैं, भावों में स्पष्टता आती है।"[1] वैसे तो काव्य के सभी रूपों में संगीत-तत्त्व विद्यामान रहता है, किन्तु गीति-काव्य और संगीत का समन्वय विशेष रूप से दृष्टिगोचर होता है।

भक्त सूरदास ने राधा-कृष्ण के पारस्परिक प्रेम, अनन्त प्रेम-क्रीड़ाओं तथा लीलाओं का वर्णन अपने गेय पदों में किया है। राधा-कृष्ण के अलौकिक और अपरिवित सौन्दर्य का सरस और हृदयग्राही चित्रण भक्त सूरदास ने किया है। भक्त सूरदास में संवेदनशीलता और भावुकता का चरम विकास हुआ है। अपने आराध्य देव की दिनचर्या तथा उनकी पूजा-अर्चना आदि का गीति वर्णन पदों में किया गया है। प्रेम का संवेदनशील रूप उसकी विभिन्न दशाओं का चित्रण, हास विलास, प्रकृति के विविध रूपों का प्रभाव आदि इन पदों में मिलता है। भक्त सूरदास के गेय पद ब्रह्म-साजों के साथ गाए जाते हैं। विरह की विभिन्न दशाओं को इन पदों में चित्रित किया गया है। सैकड़ों उपालम्भ दिलाये गये हैं। इन पदों में शास्त्रीय राग रागनियों का सुन्दर समन्वय किया गया है। भक्त सूरदास ने काव्य में प्रभाव और सौन्दर्य लाने के लिए लगभग 79 रागों का प्रयोग कर कई हजार पदों की रचना की और वह पद संगीत के मील-पत्थर हो गये हैं। ये पद प्रायः मुक्तक हैं पर उनमें एक-एक प्रसंग अवश्य है। इन पदों में पूर्ण और स्वाभाविक चित्र खींचे गये हैं। सूरसागर में छन्द-विधान का गेयत्य से नित्य सम्बन्ध है।

आचार्य हजारी प्रसाद दिविदी लिखते हैं कि "भक्त सूरदास जब अपने प्रिय विषय का वर्णन शुरू करते हैं तो मानों अलंकार शास्त्र हाथ जोड़कर उनके पीछे-पीछे दौड़ा करता है। उपमाओं की बाढ़ आ जाती है, रूपकों की वर्षा होने लगती है। संगीत के प्रवाह में कवि स्वयं बह जाता है। वह अपने का भूल जाता है। काव्य में इस तन्मयता के साथ शास्त्रीय पद्धति का निर्वाह विरल है। पद-पद पर मिलाने वाले अलंकारों को देखकर भी कोई अनुमान नहीं कर सकता, कि कवि जान-बूझकर अलंकारों का उपयोग कर रहा है। पन्ने-पर-पन्ने पढ़ते जाइए: केवल उपमाओं और रूपकों की घटा, अन्योक्तियों का ठाठ, लक्षण और व्यंजना का चमत्कार-यहां तक कि एक ही चीज दो-दो, चार-चार, दस-दस बार तक दुहराई जा रही है, फिर भी स्वाभाविक और सहज प्रवाह कहीं भी आहत नहीं हुआ।"[2]

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसारः "जयदेव की देववाणी की स्निग्ध पीयूष-धारा, जो काल की कठोरता में दब गई थी, अवकांश पाते ही लोकभाषा की सरसता में परिणित होकर मिथिला की अमराइयों में विद्यापति के कोकिल कंठ से प्रकट हुई और आगे चल कर ब्रज के करील-कुंजों के बीच मुरझाये मन को सींचने लगी। आचार्य की छाप लगी हुई आठ वीणाएँ श्रीकृष्ण की प्रेमलीला का कीर्तन करने लगी, जिनमें सबसे ऊँची, सुरीली और मधुर झनकार अन्धे कवि भक्त सूरदास की वीणा थी।"[3]

भक्त सूरदास ने अपनी कृति 'सूरसागर' में पदों के साथ सबंधित रागों का संयोजन जिस प्रौढ़ता और विवेचन से किया है, उसे देखकर तो अच्छे-अच्छे संगीतकार स्वयं को परास्त अनुभव करने लगते हैं जबकि भक्त सूरदास ने शास्त्रीय संगीत का विधिवत् कोई प्रशिक्षण नहीं लिया था। अष्टछाप के मूर्धन्य भक्त कवि भक्त सूरदास श्रीनाथ के मंदिर में दिन के एक पहर कीर्तन के माध्यम से कृष्ण की लीला का गान करते हुए अवसर-विशेष के अनुसार राग-विशेष में पद की रचना करते थे जिस कारण पद-रचना सम्बन्धितऔर संगीत साधना में एक निश्चित व्यवस्था मिलती है। भक्त सूरदास की कविता में "संगीत की धारा इतनी सुकुमार चाल से चलती है कि हमें यह ज्ञात होने लगता है कि हम

1 श्रद्धा मालवीय, भारतीय संगीतज्ञ एवं संगीत ग्रंथ, राजकमल प्रकाशन, 1997, पृ.-222, हिंदी

2 आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य की भूमिका, राधा कृष्ण प्रकाशन, 1953, पृ-96, हिंदी

3 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, भ्रमरगीतसार, राधा कृष्ण प्रकाशन, 1911, पृ.-96, हिंदी

स्वर्ग के किसी पवित्र भाग में मन्दाकिनी की हिलती हुई लहरों का स्पर्शानुभव कर रहे हैं।"[1] आत्मप्रकाशन, संगीतात्मकता, भावनात्मकता चरमोत्कर्ष और सहज प्रवाहशीलता भक्त सूरदास के गीतों की प्रधान विशेषताएँ हैं;

"बिनु गोपाल बैरिन भई कुजैं।
तब से लता लगति अति सीतल, अब भई विषम ज्वाल की पुजै
बृथा बहति जमुना, खग बोलत, बृथा कमल फूलैं अलि गुंजै"[2]

गीतिकाव्यों के रचयिताओं की श्रेणी में भक्त सूरदास का स्थान निर्धारित करने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होती है क्योंकि भक्त सूरदास के गीत अपनी विलक्षणता के कारण सर्वोप्रिय ठहरते हैं। भक्त सूरदास में गीतकार जैसी अनन्यता और गम्भीरता विद्यमान है। हृदय की प्रेममयी वृत्ति के सहयोग से जब तीव्र और मधुर अनुभूतियाँ भावों के रूप में उमड़ती हैं, तब भक्त सूरदास के कोमल कण्ठ से अनायास ही गीत फूट पड़ता है। रस धारा बह उठती है। सम्पूर्ण वातावरण रसमयी हो जाता है। यह मार्मिकता और मिठास मात्र उन पदों में ही नहीं है कि जिनमें गोपियों के संयोग या वियोग का वर्णन है अपितु उन पदों में भी है जिनमें श्रीकृष्ण उद्धव के समक्ष ब्रज से सम्बन्धित अपनी स्मृतियों के अविस्मरणीय होने की बात कहते हैं। वर्ण्य-विषय और कवि की आत्मनिष्ठता का सहयोग पाकर गीतिकाव्य की शैली में कृष्ण का चरित्र अत्यन्त मनोरम रूप से अभिव्यक्त हुआ है।

राग मारु

"ऊधो! मोहे ब्रज बिसरत नाहीं
वृन्दावन गोकुल तन आवत सघन त्र्नन की छाहीं[3]

भक्त सूरदास के गीत हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है और इनमें कृष्ण भक्ति के अतिरिक्त ब्रज संस्कृति भी साकार रूप में विद्यमान है। अपनी सरस राग-रागनियों में कृष्ण के वैभव, बाल-क्रीड़ा, रूप-सौन्दर्य, वेणु-माधुरी का वर्णन करते हैं तो पूरी कायनात संगीतमयी हो जाती है। एक अद्भुत आध्यात्मिक वातावरण की सृष्टि हो जाती है। सहृदयों को ब्रह्मानन्द में लीन कर देता है। मनमोहन गौतम कहते हैं कि "सूर के गीति-शिल्प में काव्यशास्त्र और संगीतशास्त्र का जितना योगदान है उससे भी अधिक स्वाभविकता और सहज गुण का अनिवार्य पुट हैं। सूर ने अपनी ज्ञान-राशि के द्वारा अपनी अभिव्यक्ति को समृद्व अवश्य किया, किन्तु उनका भावुक हृदय लोक-संस्कृति, लोक-रुचि और सहज मार्दव के किसी भी मूल्य पर त्याग नहीं सका। सच तो यह है कि सहज गुण की रक्षा के लिए यदि उन्हें अपने पांडित्य, काव्य-सौष्ठव और संगीत-कला को कहीं निछावर करना पड़ा, वे ऐसा करने में हिचकिचाये नहीं।"[4]

भक्त सूरदास के काव्य में राग-रागिनियों का विश्लेषण हमें यह दर्शाता है कि भक्ति और संगीत का यह अद्वितीय संगम मानव भावनाओं को गहराई से व्यक्त करता है। भक्त सूरदास की रचनाएँ न केवल धार्मिक हैं, बल्कि संगीतात्मकता के माध्यम से वे मानवता के संवेदनाओं को भी उजागर करती हैं। उनका काव्य रागों के चयन और उनके भावार्थ के माध्यम से भक्ति का एक अनूठा स्वरूप प्रस्तुत करता है, जो सदियों से भक्तों को प्रेरित कर रहा है। भक्त सूरदास की रचनाएँ इस बात का प्रमाण हैं कि कैसे संगीत और काव्य एक साथ मिलकर मानव अनुभव को गहराई से अभिव्यक्त कर सकते हैं। उनके काव्य में राग-रागिनियों का महत्व न केवल संगीतात्मकता में है, बल्कि यह भक्ति की गहराई को भी प्रकट करता है। इस प्रकार, भक्त सूरदास का काव्य एक अमूल्य धरोहर है, जो भक्ति और संगीत का अद्भुत मेल प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष

गीतिकाव्य व्यक्ति के संवेदनशील चित्त में रूपायित भावनाओं का आवेगमय, लयात्मक एवं सहज प्रकाशन है। गीतिकाव्य का शरीर गेयत्व और प्राण प्रत्यक्ष आत्माभिव्यक्ति है। सुख-दुख की भावावेशमयी अवस्था में जब कवि स्वतः बह निकलते हैं तब उनका स्वरूप गीत के

1 वर्मा, राम कुमार, हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, पृ.-417-18, 1961, हिंदी
2 https://youtu.be/8hK-rqk6x7U?si=Wq7RQF0YRBHrq6Fy
3 https://youtu.be/i8MSdZg80cQ?si=8xhhs-gdwVs8_bTS
4 शर्मा, हरबंस लाल, (सं.)-भक्त सूरदास, राधा कृष्ण प्रकाशन, 1967, पृ.-162, हिंदी

अतिरिक्त और कुछ नहीं होता। सूर के पदों का गेय रूप अपूर्व है। उनके गान में शास्त्रीय राग-रागिनियों के शुद्ध स्वर-ताल उपलब्ध हैं। 'सूरसागर' में इतने राग-रागिनयाँ का वर्णन हैं कि समस्त जीवन ही संगीत को अर्पित कर प्रभु में लीन होने की लिए पर्याप्त प्रतीत होता है। इन पदों में शब्दसंगीत, स्वरसंगीत और भावसंगीत का सामंजस्य दिखाई पड़ता है।

कवि की आत्माभिव्यक्ति का प्रतिफलन गीत में ही प्रत्यक्ष होता है। भक्त सूरदास के सभी पद आत्मनिवेदन के रूप में ही रचे गए हैं। सूर के गीतिकाव्य से यह स्पष्ट हो जाता है कि वे शास्त्रीय संगीत की गूढ समझ रखते थे एवं उसके गायक भी थे। संगीत का स्वर वैभव भी उसमें पूर्णतः विद्यमान है। राग-रागिनियों की विशिष्ट पद्धति होती है जिसमें काल (प्रातः, दिन, सायं, रात्रि) और विषयानुरूप स्वरों का बंधन होता है। भक्त सूरदास के विभिन्न रागों में राग विधान का विशेष ध्यान रखा गया है। इस प्रकार सूर की पद रचना सामान्य कवि की न होकर एक शास्त्रीय गायक की रचना भी है। साथ ही भक्त सूरदास को ब्रज प्रान्त के लोकगीतों - रसिया, होरी, हिंडोरी, सोहर, बधाई, गाली और ब्याह के गीतों का भी पूर्ण परिज्ञान था। भक्त सूरदास ने अपने पदों में दोहा, सोरठा आदि छंदों को राग-रागिनी के स्वरों में बाँध कर उन्हीं में नियंत्रित कर दिया है। कहने का तात्पर्य यह है कि सूर की पद रचना में संगीत, लोकगीत और छन्दों की त्रिवेणी का संगम है। भक्त सूरदास की वाणी उनकी अन्तःप्रेरणा की आवाज़ है। उसमें निष्छल भावाभिव्यक्ति है, कल्पना की रंगीनी, कीर्तन की ध्वनि है, भावों का सहज आवेग है, मुक्तक शैली है, संक्षिप्तता है। इन सब गुणों के कारण उनका काव्य गीति काव्य के उच्च कोटि के उदाहरणों में समाविष्ट करने योग्य है। भक्त सूरदास की वाणी उनकी अंतरू प्रेरणा की प्रतिध्वनि है। इनके काव्य में निर्शल भावाभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कीर्तन की मधुर ध्वनि, भावों का सहज आवेग, मुक्तक भाव शैली तथा संक्षिप्तता की एक साथ दर्शन किये जा सकते हैं। इसी व्यप्क्ता के प्रतिफल स्वरूप सूर का गीतिकाव्य उच्चकोटि की भाव व्यंजना के रूप में दृष्टिगत होता है।

संदर्भ

1. गर्ग (डॉ.) मुकेश, सम्पादकीय, सूरसागर के पदों का संगीतक विश्लेषण, पृ-i, हिंदी
2. शर्मा, महारानी, संगीत क्षेत्र में भक्ति काल के कवियों का योगदान, पुस्तक-साहित्य और संगीत, सम्पादक: डॉ. मुकेश गर्ग, वाणी प्रकाशन, पृ-317, हिंदी
3. खन्ना, जतिन्द्र सिंह, मध्यकालीन धर्मों में शास्त्रीय संगीत का तुलनात्मक अध्ययन, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ़, पृ. 57, हिंदी
4. शर्मा, महारानी, संगीत क्षेत्र में भक्ति काल के कवियों का योगदान, पुस्तक-साहित्य और संगीत, सम्पादक: डॉ. मुकेश गर्ग, पृ-318, हिंदी
5. प्यारे लाल श्रीमाल सरस पंडित, भक्त सूरदास का संगीत पक्ष, साहित्य और संगीत, पुस्तक-साहित्य और संगीत, सम्पादक: डॉ. मुकेश गर्ग पृ-321, हिंदी
6. प्यारे लाल श्रीमाल सरस पंडित, भक्त सूरदास का संगीत पक्ष, पुस्तक-साहित्य और संगीत, संपादक: डॉ. मुकेश गर्ग, पृ-322, हिंदी
7. महारानी शर्मा, संगीत क्षेत्र में भक्ति काल के कवियों का योगदान, पुस्तक-साहित्य और संगीत सम्पादक डा. मुकेश गर्ग, पृ-318, हिंदी
8. https://youtu.be/8jpd3iMXY00?si=v6ngSoXn0eLI-M3K गायक द्वारा यह पद राग देस में गाया गया है|
9. प्यारे लाल श्रीमाल सरस पंडित, भक्त सूरदास का संगीत पक्ष, पुस्तक-साहित्य और संगीत, संपादक: डॉ. मुकेश गर्ग, पृ-324, हिंदी
10. https://youtu.be/S_EP0Y-Z6v8?si=Jwx0dZh3eJNNQZcb
11. उद्धत, मनमोहन गौतम,सूर की काव्य कला, वाणी प्रकाशन, 1977, पृ-145, हिंदी
12. श्रद्धा मालवीय, भारतीय संगीतज्ञ एवं संगीत ग्रंथ, राजकमल प्रकाशन, 1997, पृ.-222, हिंदी
13. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य की भूमिका, राधा कृष्ण प्रकाशन, 1953, पृ-96, हिंदी
14. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, भ्रमरगीतसार, राधा कृष्ण प्रकाशन, 1911, पृ.-96, हिंदी
15. वर्मा, राम कुमार, हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, पृ.-417-18, 1961, हिंदी
16. https://youtu.be/8hK-rqk6x7U?si=Wq7RQF0YRBHrq6Fy
17. https://youtu.be/i8MSdZg80cQ?si=8xhhs-gdwVs8_bTS
18. शर्मा, हरबंस लाल, (सं.)-भक्त सूरदास, राधा कृष्ण प्रकाशन, 1967, पृ.-162, हिंदी